पद ३

(राग: कानडा - ताल: धीमा त्रिताल)

ही जीवन नौका आमुची। प्रभु-आज्ञा जलवर तरती।।धु.।। काम क्रोध मद मत्सर वादळी। डोलत जाये सवेगी।।१॥ दु:ख लाट व्याधी जलडोही निर्भय चालत पुढती।।२॥ सत मिथ्या सिंधू जगरूपी। नाविक शक्ती प्रभुची।।३॥ सिद्ध प्रार्थी या जीवन नौकी। सारथी व्हावे प्रभुजी।।४॥